Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar (L.N.M.U)
Mail ID:- rajgopal#58@gmail.com

Berkeley : Refutation of Matter (Lecture-II)

बर्कले : जड़वाद का खंडन (व्याख्यान-II)

बर्कले के अनुसार दर्शन का लक्ष्य सृष्टि की यांत्रिकवादी, भौतिकवादी और वस्तुवादी व्याख्या का खंडन करना है। वह जगत की प्रयोजनवादी आध्यात्मवादी और प्रत्ययवादी व्याख्या प्रस्तुत करता है। इसके लिए वे जड़ द्रव्य की सत्ता का निराकरण किया है। इसके लिए वे सबसे पहले अमूर्त प्रत्ययों के सिद्धान्त का खंडन किया है। इसकी विस्तृत चर्चा कल के व्याख्यान में किया जा चुका है। जड़तत्व का आधार अमूर्त प्रत्ययों का सिद्धान्त है। वे अमूर्त प्रत्ययों के खंडन के साथ-साथ जड़ तत्वों का भी निराकरण किया है।

लॉक ने अनुभव के आधार पर केवल विशेषों के ज्ञान को संभव माना है लेकिन विशेषों के आधार पर सामान्य तत्व का भी प्रतिपादन किया है। इस प्रकार से लॉक ने विभिन्न गुणों के आश्रयदाता के रूप में सामान्य द्रव्य की अवधारणा का प्रतिपादन किया है। बर्कले के अनुसार इन्द्रियानुभव के द्वारा केवल विशेष वस्तुओं प्रत्ययों आदि की कल्पना की जा सकती है। सामान्य की कल्पना करने पर भी हमारे मन में किसी विशेष गाय, विशेष मनुष्य आदि की प्रतिमा अंकित होती है। अतः समस्त प्रत्यय विशेष और (मूर्त) वास्तविक होते हैं। किसी भी प्रत्यय को अमूर्त कहना आत्मव्याघाती अवधारणा है। इस प्रकार से बर्कले अमूर्त प्रत्ययों के आधार पर लॉक द्वारा प्रतिपादित बाह्य जड़ द्रव्य के अस्तित्व का निराकरण करता है।

Scanned with CamScanner

लॉक के अनुसार जड़ तत्व का हमें साक्षात ज्ञान नहीं होता है। प्रत्यक्ष तो केवल हमें गुणों का होता है। परन्तु गुणों के आश्रय के रूप में हम पदार्थ की सत्ता मान लेते हैं। यहाँ आश्रय का तात्पर्य भौतिक आधार या आश्रय नहीं है। अर्थात भौतिक रूप में हमें जड़ तत्व का प्रत्यक्ष नहीं होता है। इसका अर्थ है जड़ तत्व की सामान्य सत्ता है। सामान्य सत्ता के प्रत्यय से गुणों का प्रत्यय संयुक्त है। परन्तु सामान्य सत्ता का विज्ञान अमूर्त है जो स्वतः असिद्ध है। बर्कले का मानना है कि लॉक का जड़तत्व निष्क्रिय है, निष्क्रिय जड़ तत्व हमारे संवेदनों का कारण नहीं हो सकता है। दूसरी ओर हमारी संवेदनाएँ चेतन हैं, चेतन संवेदनाएँ का कारण अचेतन जड़ तत्व नहीं हो सकता है। प्रत्यय किसी भौतिक वस्तु का प्रतिनिधित्व नहीं हो सकता है। जो अनुभव का विषय है वह प्रत्यय है। हम केवल विशेषों का ही अनुभव कर सकते हैं। अतः सभी प्रत्यय विशेष हैं। बर्कले प्रमाणित है कि अमूर्त प्रत्ययों के आधार पर जड़द्रव्य की कल्पना करना युक्तिसंगत नहीं है।

लॉक ने मूलगुण एवं उपगुण के आधार पर द्रव्य की सत्ता को स्वीकार करते हैं। मूलगुण को द्रव्य का अविच्छेद्य वास्तविक धर्म माना है। इसके अन्तर्गत घनत्व, विस्तार, आकार आदि आता है। उपगुण के अन्तर्गत रूप, रस गंध आता है। उपगुण हमारे मन के संवेदनमात्र है इसकी उत्पत्ति मूलगुणों के कारण होता है। बर्कले मूलगुण एवं उपगुण दोनों को आत्मनिष्ठ मानते हैं। मूलगुणों को स्वतंत्र रूप में उपगुणों का अस्तित्व नहीं है। इसलिए मूलगुण एवं उपगुण परस्पर अविभाज्य है। ऐसे रंग का अनुभव नहीं हो सकता है जो विस्तारहीन, आकार हीन और गतिहीन हो। इस प्रकार से मूलगुण तथा उपगुण संबंध होने के कारण दोनों हमारी आत्मा के प्रत्यय है। इस प्रकार से दोनों गुणों का आश्रय कोई एक चेतन तत्व है वह आत्मा है। इसका आश्रय जड़ द्रव्य नहीं है। इस प्रकार जड़द्रव्य अप्रमाणित है।

Scanned with CamScanner